GRADE:5 **HINDI** **POEM- 10 (बढ़े चलो)**

कविता का मूलभाव

कविता में प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया गया है। प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से कवि उनकी विशेषताओं का वर्णन करते हुए निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

Summary

This poem mainly gives the motivation to move ahead by setting several examples from nature. Poet has set examples of Sun, Waterfall and many more and saying children to learn from them and just go ahead.

कविता का सरलार्थ

पर्वत जैसे .... बढ़े चलो।

जिस प्रकार पर्वत स्थिर खड़ा गर्व से जीने का संदेश सुनाता है, उसी प्रकार गर्व से निरंतर आगे बढ़े चलो। छोटे-छोटे कदमों से निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होते रहो।

झरझर-झरझर .... बढ़े चलो।

झरने निरंतर बहते हुए झरझर का मीठा संगीत सुनाते हैं। उसी प्रकार लहरें क्या कहना चाहती हैं, उस बात पर विचार करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहो।

सूरज रोज़ .... बढ़े चलो।

सूरज प्रतिदिन प्रकाश फैलाता है और उस प्रकाश से डरकर अँधेरा भाग जाता है। तुम भी सूरज के प्रकाश की भाँति रोशनी बनो तथा निरंतर आगे बढ़े चलो।

कली-कली .... बढ़े चलो।

जिस प्रकार कलियाँ सुगंध फैलाती हुई सबके मन को खुशियों से भर देती हैं, उसी प्रकार तुम भी सबको खुशियाँ देते हुए निरंतर आगे बढ़े चलो।

3. **समझो और लिखो** Understand and write—

क. झरने किस प्रकार बहते हैं?

उ. ...झरने झर-झर करके बहते हैं।...

ख. सूरज प्रतिदिन क्या लेकर आता है?

उ. ...सूरज प्रतिदिन उजाला लेकर आता है।...

ग. सुगंध कौन फैलाता है?

उ. ...कलियाँ सुगंध फैलाती हैं।...

घ. किसके आने पर अंधकार छिप जाता है?

उ. ...सूरज के आने पर अंधकार छिप जाता है।...

4. **समझो और करो** Understand and do—